# सत्य साहित्य

वर्ष 5 / अंक 1
अक्टूबर 2021
Year 5/ No. 1
October
2021

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

(परम पूजनीय प्रेम जी महाराज द्वारा हस्तलिखित)

– गुरु को सिर पर राखिये
चलिये आज्ञा माहिं।
कहे कबीर तेहि दास को।
तीन लोक डर नाहिं॥

सेवक कूकर गुरु का
मोतिया वा का नांव
डोरी लागी प्रेम की
जित खींचे तित जाव॥

दुर दुर करे तो बाहिरे।
तू तू करे तो जाये॥
ज्यों गुरु राखे त्यों रहे।
जो देवे सो खावे॥

(परम पूजनीय महाराज जी की भजन डायरी से)

## इस अंक में पढ़िए


- भजन
- बधाई
- Saints: the Embodiment of God
- यात्री
- गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
- श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण
- अनुभूतियाँ
- विभिन्न केन्द्रों से
- Calendar
- Children's Page


सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹5

# परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के 101 जन्मदिन की बधाई

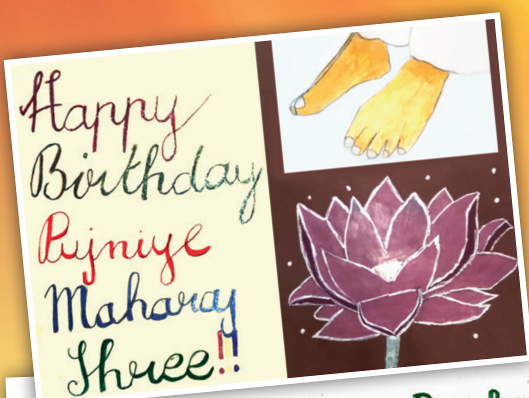


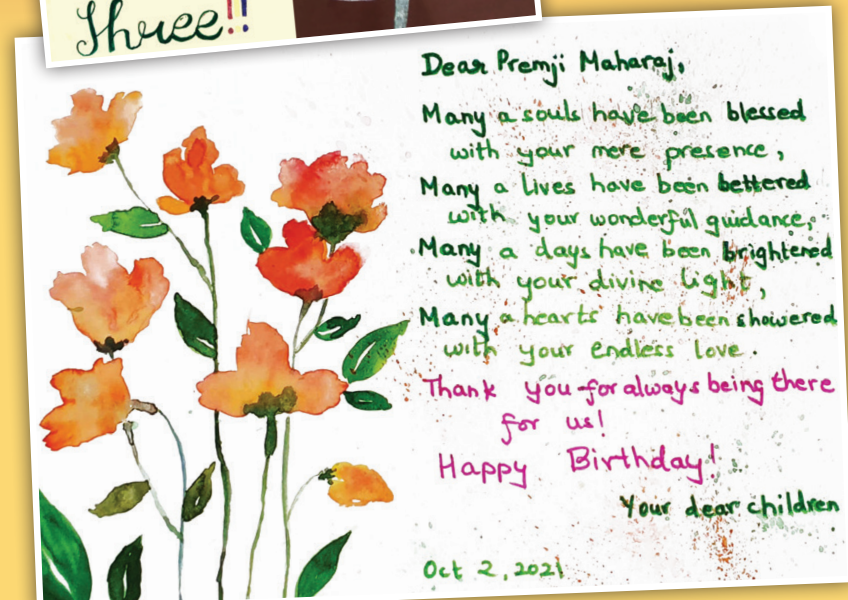


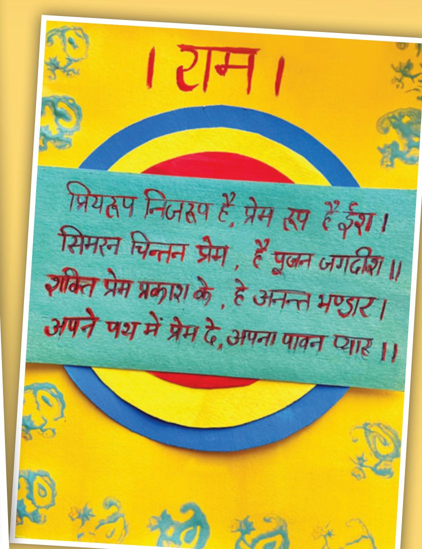

# दीपावली की बधाई

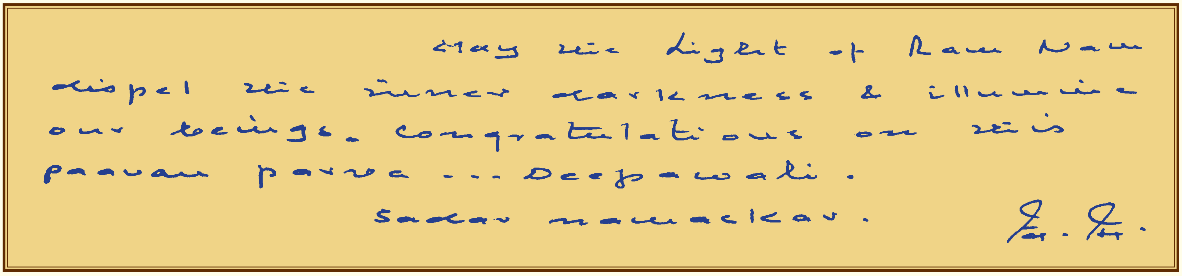
May the light of Ram Nam dispel the inner darkness & illumine our beings. Congratulations on this paavan parva ... Deepawali.
Sadar namaskar.

'राम नाम का प्रकाश हमारे आन्तरिक अंधकार को दूर कर हमें प्रकाशित करे। इस पावन पर्व पर दीपावली की बधाइयाँ। सादर नमस्कार।'

# Saints: the Embodiment of God

सत्यानन्द

Human temperament is subject to change. It does not take very long for the ordinary man to have a change of heart. Reposing one's faith in an impious person may prove harmful. Everyone is going crazy about this phenomenal world. The bewitching power of *maya* deludes the materialist and ruins him completely. So only those who always remain above the realm of *maya* can partake of supreme peace. One must learn some craft or trade in order to earn a livelihood and provide for the future. This is advantageous. It makes one independent. Independence is a huge blessing.

One towards whom a saint is compassionate and who becomes the recipient of his hallowed blessings imbued with love is sure to realize God. Lord showers abundant and special grace upon him. Some day or the other all his obstacles will be shattered to smithereens (pieces). He is protected in all the three worlds. Because Saints are the embodiment of God only. Devotees on the path of Bhakti should gulp down obstacles imposed by people like a *sherbet* so to speak. This proves very beneficial and one should keep up repetition of Lord's name with love and devotion. We all have an emotional connect with each other. We may appear as many but are one in spirit within. One should read the scriptures. This enlightens the mind. Suffering does not last forever. Unnecessary interaction with anyone should be avoided unless there is a specific purpose. Mutual consultation before starting any new undertaking is beneficial.

*Phagun - 14 Vikrami 2016 (Pravchan Piyush,* pp. 509-510*).* ■

**परम पूजनीय स्वामी जी महाराज के मंगल निर्वाण दिवस 13 नवम्बर (1960) पर उनके चरणों में श्रद्धा सुमन।**

**परम पूजनीय महाराज जी के तिलक दिवस 9 दिसम्बर (1993) पर लख लख बधाई।**

# यात्री

प्रेम

यह जीवन भी तो एक यात्रा ही है – दूर देश में आकर रास्ता भूल कर भटकने में कितनी घबराहट और शोक होता है परन्तु श्रीराम का सहारा ले लेने से इस भव सागर से भी सुगमता से निस्तार हो जाता है।

इस जीवन यात्रा में भी जो देश देशान्तर की यात्रा करते हैं उन्हें कई बार कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है परन्तु श्री राम की सहायता पर निर्भर रहने वाले को महाराज सब ओर से सब प्रकार के सुख ही प्रदान करते हैं।

**राम नाम हो सदा सहायक।**
**राम नाम सर्व सुख दायक।।**

महानदी के तट पर घने जंगल में एक बार गुरु नानक देव जी ने कुछ दिवस निवास किया। उसी वन में चोर डाकू कटक नगर से लूट मार करके आ छुपते थे। वहीं एक बाबा भ्रमण कर करके थक कर आयु के अन्तिम दिन व्यतीत करने को टिक गये। भगत लोग, राजे महाराजे वहाँ दर्शनों को आने लगे, थोड़े समय में जंगल में मंगल हो गया। मन्दिर बन गये जो कोई यात्री आता उसे वहाँ भोजन भी मिलता।

बाबा को एक पुराने मित्र की याद आई, व्याकुल हो गये। 15 दिन कुछ खाया पिया नहीं, किसी से कोई बात नहीं की, सब शिष्यगण भी बाबा की ऐसी अवस्था देख बहुत दुःखी थे, परन्तु किसी को कारण मालूम न था।

कटक नगर से भगत लोग डेरे में आते परन्तु किसी को बाबा का मंगल मिलाप प्राप्त न होता। सारे डेरे में बूढ़े बाबा को इस प्रकार अनशन करते देख और सुन लोगों के हृदय में निराशा के बादल छा रहे थे। परन्तु इस कठिनतर घोर तपस्या का उद्देश्य बाबा जानते थे या बाबा के राम। आज सोलवां दिन था, बाबा के अन्दर एक कतरा पानी भी नहीं गया यही सब ओर चर्चा हो रही थी – कि बाबा इस अधेड़ आयु में इस प्रकार कैसे जी सकेंगे।

उधर एक युवक किसी अपने उड़िया मित्र से बाबा की बातें सुन–सुन कर बाबा के दर्शनों को रात्रि के काल में दूर प्रान्त से

आ निकला। भगवान की स्तुति गद्‌गद हृदय से और बड़े आतुर भाव से सब शिष्य लोग गा रहे थे। आरती उतार रहे थे। उस युवक को यह जान कर खेद हुआ, जिस बाबा का मंगल मिलाप चाहता था, उसकी किसी को भेंट नसीब नहीं क्योंकि बाबा बहुत कमजोर हो गये हैं। सोलह दिन से बाबा के अन्दर एक बूँद पानी की भी नहीं गई। सब लोग कह रहे थे कि वे तो दैवी शक्ति से ही जी रहे हैं। अगले दिन रथ यात्रा का शुभ पर्व था। परन्तु रथ में बाबा के बजाय बाबा की मूर्ति होनी थी। उस युवक ने सोचा कि यदि बाबा के दर्शन भाग्य में नहीं तो रथ यात्रा का उत्सव देख कर भुवनेश्वर होते हुए जगन्नाथ पुरी चला जाऊँगा। आधी रात्रि से अधिक बीत चुकी थी। सर्दी का मौसम था, चाँदनी रात थी – महानदी का किनारा था, राम नाम का आराधन हो रहा था। परन्तु ध्यान सब का बाबा की ओर था।

**शोक सागर हो उमड़ा आता।**
**अति दुःख में मन घबराता।।**
**भजिए राम नाम बहु बार।**
**जन का करता बेड़ा पार।।**

परम पावन नाम का ही केवल आधार था। रात बीत गई। दिन चढ़ आया अपने भाग्य लेकर कटक से चिन्ता मग्न भगत पधारने लगे, परन्तु यह जानकर कि बाबा में अभी प्राण हैं, उनको श्वास आया, और साथ ही थोड़ा धैर्य भी। भुवनेश्वर जाने से पूर्व फिर एक बार कोशिश की कि बाबा के दर्शनों का लाभ हो जाए।

**सफलता तेरे संग है, ज्यों छाया तन साथ।**
**पावे जय जावे जहाँ, सफल रहे तव हाथ।।**

राम राम करते बाबा के सैक्ट्री के पास पहुँचे, बाबा का कुशल मगंल पूछा, फिर उस युवक से यह जान कर कि वह पश्चिम से बाबा के दर्शनार्थ वहाँ आया था और निराश होकर वहाँ से जा रहा है, उस सैक्ट्री के हृदय में तरस आ गया। दया की बदली उमड़ आई, और नयनों से नीर बरसने लगा। कहने लगे 'चलो दर्शन कर लो, पर बाबा बात नहीं करेंगे। आज सत्रहवाँ दिन है बाबा ने कुछ खाया पिया नहीं।' मौन भाव से चरणों की ओर गये, और माला फेरते रहे। सैक्ट्री ने धीरे से धैर्य सहित, बाबा के निकट होकर बड़ी नम्रता और प्रेम दर्शाते हुये अपने गुरु से कहा – बाबा। एक पंजाबी दर्शनों को आया है। इतनी देर में वह युवक खड़ा हो गया। बाबा उठकर बैठ गये, देख कर हँस पड़े, पूछने लगे, 'क्या तुम मुझे जानते हो।' 'नहीं – मैं तो यहाँ पहली बार ही आया हूँ।' परन्तु बाबा उसे पहचान गये। उठ कर गले लगाया, बार–बार छाती से लगाया, बाबा की शक्ति नवतर हो गई। इस अद्‌भुत दृश्य को देखकर सब भगत लोग हैरान हो गये। बाबा ने उसे कुछ पीने को पूछा, परन्तु उस युवक ने कहा कि 'आप पियेंगे – तो मैं भी ले लूँगा।' उस युवक की प्रार्थना पर बाबा ने सूप पी लिया। और सारे डेरे में आशा का सूर्य उदय होकर चमकने लगा। सब बड़े सुप्रसन्न थे कि एक पंजाबी के कहने पर बाबा ने अपना अनशन 17वें दिन तोड़ दिया, फिर बाबा ने उसे दो तीन दिन अपने पास रखा, और अपनी पुरानी बातें याद कर करके उसे वात्सल्य भाव दिखाया, तीसरे दिन भुवनेश्वर जाने लगे तो बाबा ने वापसी पर फिर डेरे में ठहरने के लिये निमन्त्रण दिया।

*(परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज जी का लेख, सितम्बर 1962 के सत्य साहित्य अंक में प्रकाशित)* ■

गुरु मार्ग-दर्शक एवं नेतृत्व कर्ता है। गुरु वह है जिसका अपना जीवन परमात्मा के जीवन के साथ मिश्रित हो गया है; जो परमात्मा में उन्मत्त है; जिसका हृदय हर समय विश्व के सभी जीव-जन्तुओं के लिए करुणा एवं प्रेम से आप्लावित है।

'गुरु मार्गदर्शक एवं नेतृत्व कर्त्ता है। गुरु वह है जिसका अपना जीवन परमात्मा के जीवन के साथ मिश्रित हो गया है; जो परमात्मा में उन्मत्त है; जिसका हृदय हर समय विश्व के सभी जीव – जन्तुओं के लिए करुणा एवं प्रेम से आप्लावित है।'

# गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः

विश्वामित्र

आज स्वामी जी महाराज ने तुकाराम का प्रसंग लिया है।

माँ लक्ष्मी विठ्ठल भगवान के मन्दिर में भगवान को उदास देख रही हैं। शाम का समय हो गया है। दिन भर भारी भीड़ रही, सब आ–जा रहे हैं, सब दर्शन कर रहे हैं, मत्थे टेक रहे हैं, प्रसाद ले रहे हैं और चलते जा रहे हैं। आज सदा की अपेक्षा ज्यादा भीड़ थी। लेकिन लक्ष्मीपति उदास हैं। लक्ष्मी जी ने पूछा, इतनी भीड़ है देखो, इतना चढ़ावा चढ़ा है, इतने फूल पहले कभी नहीं चढ़े जितने आज चढ़े हैं, गोलक भी आज खूब भर रहे हैं, बाहर भी पैसे पड़े हुए हैं, इतनी भीड़ है, तो आप इतने उदास क्यों हैं? भगवान ने कहा, ''जिसे अखियाँ खोजती हैं वह अभी तक नहीं आया।'' ''वह कौन है? इतने यात्री आए हैं। इतने भक्त आए हैं आपके।'' ''अरे नहीं! ये भक्त नहीं हैं। ये मेरे भक्त नहीं, ये मेरे चाहने वाले भक्त नहीं हैं। वह सब 'मेरे से' चाहने वाले हैं। ये उन चीज़ों के भक्त हैं मेरे भक्त नहीं हैं। ये अखियाँ खोज रही हैं जो मेरा भक्त है, मेरा चाहने वाला है – तुकाराम। आज उसे बुखार है, वह वहाँ लेटा–लेटा भी यहीं पर है, मेरे पास। शरीर तौर पर वह यहाँ आ नहीं पा रहा। तो मुझे ही जाना पड़ेगा उसके पास।'' क्या कहोगे इसे? भगवान् जा रहे हैं भक्त के दर्शन करने या भगवान् जा रहे हैं भक्त को दर्शन देने के लिए? परमात्मा ही जाने क्या बात सत्य होगी!

मैंने कहीं पढ़ा नहीं, मुझे नहीं लगता कि संत तुकाराम ने स्कूल देखा होगा। कहीं पढ़े लिखे हैं, ऐसा प्रमाण नहीं मिलता। अनपढ़ संत।

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देव महेश्वर का अर्थ समझाते हैं संत तुकाराम। तुकाराम कहते हैं गुरु सृष्टा है। जैसे सृष्टि की रचना करने वाला सृष्टि की रचना करता है उसे सृष्टा कहा जाता है – ब्रह्मा जी। गुरु भी ब्रह्मा है। वह एक शिष्य को, उसके जीवन को नई दिशा देता है। जीवन का रुख बदलने वाला, नया जीवन देने वाला है गुरु। आप कहते हो दीक्षा हुई है आज हमारी; पुनर्जन्म हुआ है हमारा। बिना मृत्यु के, बिना मरे पुनर्जन्म। यह सब ब्रह्मा जी नहीं कर सकते, यह गुरु करता है। एक नई direction आपके जीवन को दे देता है। चेष्टा रहती है उसकी–हर वक्त चेष्टा रहती है कि साधक का स्वभाव बदले। मैं वह दिन देखना चाहता हूँ जिस दिन यह साधक अपना स्वभाव बदल कर, अपनी अफसरी भूल कर एक शिष्य बन कर तो मेरे पास आएगा। गुरु उसके जीवन को नई दिशा देता है। मन सुधारने के लिए, स्वभाव बदलने के लिए, गुरु नित्य अवसर देता है और प्रेरणा देता है – गुरु ब्रह्मा है।

तुकाराम जी गुरु ब्रह्मा का अर्थ समझा रहे हैं जैसा हम समझते हैं वैसा नहीं; वास्तविक अर्थ, मार्मिक अर्थ। तुकाराम समझा रहे हैं कि जब गुरु को ब्रह्मा कहा जाता है तो उसका अर्थ क्या है?

गुरु विष्णु यानि रक्षक है, पालनकर्ता है। किस चीज़ से रक्षा करता है? शारीरिक रक्षा तो गुरु नहीं कर सकते, जैसा हम समझते हैं। कभी–कभी आप कहते हैं आज गुरु महाराज ने हमारी रक्षा की है। आप बताते हैं कि बड़ा भयानक accident हुआ था, कार का तो कचूमर निकल गया पर हम सुरक्षित रहे। गुरु महाराज ने हमारी रक्षा की यह आपका विश्वास है लेकिन यह काम गुरु शारीरिक तौर पर तो देवियो! नहीं कर सकता। यदि गुरु को शरीर समझते हो तो वह तो एक ही जगह पर हो सकता है। जहाँ आपका accident हुआ है वहाँ तो नहीं हो सकता और वहाँ होता भी तो क्या कर लेता? तुकाराम इन चीज़ों में विश्वास न रख कर, जो

जीवन्त धारणाएँ हैं उन पर चोट मार कर खत्म करके तो सच्चाई को प्रकट करते हैं।

गुरु विष्णु यानि गुरु रक्षक है। गुरु बचाता है पर किससे? पाप से बचाता है गुरु। पाप करने से बचाता है। पाप करने से गुरु के अतिरिक्त, परमात्मा के अतिरिक्त, कोई दूसरा नहीं बचा सकता। ये तात्विक तत्व है। ये शारीरिक बात नहीं है। आप शराब पी रहे हो गुरु वहाँ होता तो नहीं है। लेकिन कोई चीज़ है जो आपको रोक रही है, जो यह कहती है कि मेरा गुरु मुझे देख रहा है। किसी भी प्रकार का आप पाप करने जा रहे हो, एक दफ़ा तो आप हिलते हो। सामान्य व्यक्ति तो ऐसा नहीं कर सकता। आप हिलते हो तो क्यों? क्योंकि, आप श्रीरामशरणम् से जुड़े हुए हो, आप किसी गुरु से जुड़े हुए हो। सामान्य व्यक्ति को तो इन बातों का कोई फर्क नहीं पड़ता। दिन में गलती से कोई पाप हो जाता है तो रात को आपको नींद नहीं आती, वह राम सोने नहीं देता। क्या कर डाला आपने! चैन नहीं लेने देता आपको। गुरु को भी धक्का लगा और मुझे भी धक्का आपने मार दिया।

**सत्संगति ही एक साधन है जहाँ से परमात्मा की प्रीति सीखी जा सकेगी। लाजपत नगर मार्किट से नहीं, अमेरिका से नहीं, यूरोप से नहीं। एक संत की संगति, एक भक्त की संगति ही जो है वह आपको प्रीत की रीत सिखा सकेगी। यह जुकाम से भी ज़्यादा contagious है। एक व्यक्ति को जुकाम होता है, flu होता है फट दूसरे को हो जाता है। ठीक इसी प्रकार से भक्ति है, प्रीति है।**

तुकाराम, गुरु ब्रह्मा से अभिप्राय लेते हैं कि गुरु नए जीवन के दाता हैं इसलिए उन्हें 'गुरु ब्रह्मा' कहा जाता है। ब्रह्मा जैसे मुख तो नहीं हैं गुरु के, संत के, लेकिन जैसे ब्रह्मा जी हमारे सृष्टा हैं, विधाता हैं, इसी प्रकार से जिन शिष्यों के गुरु हैं उनके जीवन को नई दिशा देने वाले, बिना मृत्यु के पुनर्जन्म देने वाले गुरु हैं। ब्रह्मा जी तो पहले मारते हैं फिर जन्म देते हैं लेकिन गुरु अपने ही ढंग से मारते ही हैं। शायद, पहला व्यक्तित्व मार देते हैं। जो अच्छा शिष्य होता है वह कहता है कि वह जो था वह मर गया, मैं अब 'वह' नहीं हूँ। कोई अपराधी है, जेल में रहा है, वहाँ राम नाम की जी भर उपासना की है। उपासना करने के बाद यह 'शब्द' ऐसे कहता है कि 'मैं अब वो नहीं रहा'। गुरु द्वारा मन्त्र लेकर नाम जपा है उसने और अपने जीवन का रुपान्तरण कर लिया है उसने; श्रेय गुरु को मिलता है। गुरु शिष्य के मन को सम्भालता है, सुधारता है उसके स्वभाव में परिवर्तन लाता है। मन सुधरा तो जग सुधरा। मन सुधर गया तो व्यक्ति स्वयं भी सुधर जाता है। सो मन पर पूरी दृष्टि रखता है सच्चा संत या सच्चा गुरु, शरीर पर नहीं। उसका सम्बन्ध ही मानसिक, तात्विक सम्बन्ध है। इसीलिए देवियो और सज्जनो! 'साथ' रहने के लिए तो शरीर चाहिए लेकिन 'पास', रहने के लिए शरीर की आवश्यकता नहीं। गुरु के साथ रहने वाले प्रायः खाली रहते हैं क्योंकि वे शरीर से अधिक, शरीर से आगे, गुरु को देख ही नहीं पाते। लेकिन पास रहने वाले, दूर रहते हुए भी गुरु से जिनके सम्बन्ध आत्मिक सम्बन्ध हैं सब कुछ पा जाते हैं। साथ रहने के लिए शरीर की आवश्यकता, लेकिन पास रहने के लिए शरीर की आवश्यकता नहीं। गुरु को शरीर समझा जाए तो वह तो एक ही जगह हो सकता है, सब जगह तो नहीं। आप परमात्मा के लिए कहते हो हमें महसूस होता है कि परमात्मा हर वक्त हमारे अंग–संग है, शरीर तो नहीं है। संतों महात्माओं के लिए भी देवियो और सज्जनो! इसी प्रकार कहा जाता है। यह सच्ची दृष्टि है। ऐसा ही होना चाहिए। संत तुकाराम गुरु ब्रह्मा का अर्थ समझा रहे हैं।

गुरु विष्णु यानि रक्षक हैं हमारे, पोषक हैं हमारे।

शरीर की रक्षा गुरु नहीं कर सकता। कम से कम मैं ऐसा नहीं मानता। लेकिन पाप से बचा सकता है। पाप से रक्षा करता है। आपको कुपथ पर जाने से रोकता है। परमेश्वर ने उसे यह समर्थ दे रखा है कि जहाँ तू रुकावट डालना चाहता है तू डाल सकता है, मैं तेरी सहायता करूँगा। गुरु कुमार्ग पर चलने से बचाता है और सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा देता है, प्रोत्साहन देता है और धक्के मारता है। ईश्वर की ओर बढ़ने के लिए गुरु प्रेरणा देता है, बल देता है, आत्मिक बल और प्रोत्साहन देता है। सत्संगति में यह सब कुछ हर साधक को मिलता है। जो ग्रहणशील है जो झुकना सीख गया है जिसके अन्दर विनम्रता आ गई है वह अधिक पा लेता है। जो ऐंठा रहता है वह खाली तो नहीं रहता लेकिन कम से कम पाता है। आप कहीं भी छिप जाओ सूर्य के प्रकाश से आप बच तो नहीं सकोगे। उसका स्वभाव है प्रकाश देना, उसका स्वभाव है तेज देना। आप अन्धेरी से अन्धेरी कोठरी में भी जाकर छिप जाओ कहीं न कहीं से सूर्य की किरण आपको दिखाई दे जाएगी—गुरु विष्णु।

गुरु देव महेश्वरः। संत तुकाराम कहते हैं कि गुरु पाप से हमें बचाता भी है, पाप करने से रोकता है, पापी मार्ग से बचाता है, हटाता है, रोकता है। बताता है कि इस मार्ग पर नहीं चलना। गुरु पुराने कर्मों को जला कर भी राख कर देता है। पुराने कर्म जल गए, नए पाप से बच गए तो 'गुरु देव महेश्वरः।' वह मोक्ष का दाता हो गया। आप मानो न मानो लेकिन शास्त्र इस प्रकार से कहता है कि मुक्ति का दाता गुरु है, परमात्मा नहीं।

हरेक का विषय नहीं है यह, बहुत उच्च बात है। प्रायः मैं इन बातों पर चर्चा नहीं करता। हरेक के विश्वास का यह विषय नहीं है। हरेक का अपना–अपना स्तर है उसी के अनुसार उसका विश्वास हुआ करता है, उसकी श्रद्धा हुआ करती है। अतः हरेक शिष्य का यह विषय नहीं है। पर आज तुकाराम जी चूँकि इस बात पर चर्चा कर रहे हैं तो जो चर्चा उन्होंने की वही आपकी सेवा में रखी जा रही है, मैं इसमें अपनी ओर से कुछ नहीं कह रहा। इससे अधिक भी है कहने को लेकिन मैं कहता नहीं।

तुकाराम अपने बारे में बताते हैं कहते हैं : ''बचपन में सत्संगति मिल गई। सत्संग की बातें सुनता था हरि चर्चा सुनता था तो मेरे अन्दर परमात्मा के लिए प्रीति जागृत हो गई।'' तुकाराम समझाते हैं बिटिया! सत्संगति ही एक साधन है जहाँ से परमात्मा की प्रीति सीखी जा सकेगी। लाजपत नगर मार्किट से नहीं, अमेरिका से नहीं, यूरोप से नहीं। एक संत की संगति, एक भक्त की संगति ही जो है वह आपको प्रीत की रीत सिखा सकेगी। यह ज़ुकाम से भी ज़्यादा contagious है। एक व्यक्ति को ज़ुकाम होता है, flu होता है फट दूसरे को हो जाता है। ठीक इसी प्रकार से भक्ति है, प्रीति है। यह प्रीति यहीं से सीखने को मिलती है, सत्संगति से भक्ति मिलती है, संत की संगति से मिलती है। मेरे अन्दर विठ्ठल के प्रति प्रीति जागृत हुई। जब प्रीति जागृत होती है तो व्यक्ति जिसके प्रति प्रीति हुआ करती है तो उसे याद किए बिना नहीं रह सकता। अतएव मैं हर वक्त विठ्ठल, विठ्ठल, विठ्ठल करता रहता हूँ। याद करता रहता हूँ, mechanical नहीं।

एक रात्रि स्वप्न हुआ, स्वामी जी महाराज ने भी चर्चा की हुई है। स्वप्न में एक संत दिखाई दिए। हरेक को तो संत नहीं दिखाई देते, तुकाराम को संत के दर्शन हुए। कहा मुझे विठ्ठल भगवान ने भेजा है जिनमें तेरी आस्था है मैं उन्हीं की बात करता हूँ। मुझे विठ्ठल भगवान ने भेजा है तुझे उपदेश देने के लिए। तुकाराम कहते हैं,''मुनिवर! मैंने जिन्दगी में आज तक कोई सेवा का काम नहीं किया। ऐसी अहैतुकी कृपा मेरे ऊपर क्यों?'' तुकाराम बता रहे हैं, ''संत की कृपा का पात्र बनने के लिए एक अनिवार्य चीज़ है जिसे सेवा कहा जाता है। मैंने कोई सेवा नहीं की, कोई सत्कर्म नहीं किया फिर मेरे ऊपर भी संत की अकस्मात कृपा मानो परमात्मा की कृपा। कैसे?''

*(पूजनीय महाराज जी के प्रवचश्रन का एक अंश, 1 & 2 Feb, 2010)* ■

# श्रीरामशरणम् हाँसी - एक ऐतिहासिक विवरण

('श्रीरामशरणम् : एक ऐतिहासिक विवरण' के अन्तर्गत लेखों की अगली कड़ी)

उत्तर भारत के हरियाणा प्रदेश में एक छोटा सा शहर है, हाँसी। पूज्य पाद स्वामी सत्यानन्द जी महाराज सन् 1949 में प. लक्ष्मीदत्त जी के साथ हाँसी शहर में पधारे। स्वामी जी महाराज की चरण–रज पाकर हाँसी व आस–पास के गाँव के लोगों का जीवन धन्य हो गया।

**धन्य हुआ मैं सत्गुरु पाके,**
**सत्गुरु मेरे राम मिला दे।**

''इधर हाँसी के इलाके में मैं बहुत घूमा हूँ, क्योंकि एक–एक व्यक्ति को दीक्षा देने के लिए मैं कई–कई कोस जाता था। जहाँ मैं ठहरता था वहाँ रात को बोला भी करता।''

(*प्रवचन पीयूष*, पृ. 9)

परम पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने सन् 1950 में नहर कोठी में पहला साधना सत्संग लगाया। इसमें 18 साधक सम्मिलित हुए। 1960 तक श्री स्वामी जी महाराज साधना सत्संग लगाते रहे, बहुत संख्या में साधक बड़े भाव–चाव से शामिल होते। उसके बाद भी लगातार यहाँ साधना सत्संग लगते रहे। परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज की चरण शरण में भी 1987 तक साधना सत्संग सम्पन्न हुए। उसके पश्चात् भी साधना सत्संग का सिलसिला जारी रहा।

श्री स्वामी जी महाराज के परिवार की संख्या को नित्य सवाया होते देख कर श्री गोविन्द लाल जी के निवेदन पर परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज ने श्री रामशरणम् के निर्माण की स्वीकृति प्रदान की। दिनांक 24.12.1996 को श्री रामशरणम् का शिलान्यास श्री विश्वामित्र जी महाराज के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। दो वर्ष के अल्प समय में ही श्री रामशरणम् बन कर तैयार हो गया। 24.12.1998 को परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज के कर कमलों से उसका विधिवत् उद्घाटन हुआ और 'प्रेम सदन' नामकरण किया गया।

इस मंगल पर्व के उपलक्ष्य में दिनांक 21.12.1998 से 24.12.1998 तक अखण्ड जाप हुआ। तत्पश्चात् हवन, भजन संकीर्तन व परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज का प्रवचन हुआ। भण्डारा प्रसाद का आयोजन भी हुआ जिसमें लगभग 4000 संगत ने प्रसाद ग्रहण किया।

अगले ही दिन दिनांक 25.12.1998 से 30.12.1998 तक परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज की चरण–शरण में साधना सत्संग लगा। उस दौरान महाराज जी ने नाम दीक्षा दी। खुली सभा में हज़ारों की संख्या में साधकों ने भाग लिया।

श्री रामशरणम् के निर्माण से पहले दैनिक व साप्ताहिक कार्यक्रम श्री गोविन्द लाल जी के निवास स्थान पर बरसों तक आयोजित होते रहे। हर वर्ष 1 जून से 30 जून तक श्री रामायण जी का अखण्ड पाठ होता रहा है। परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज व परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज पाठ की पूर्णाहूति पर सम्मिलित होते रहे।

श्री रामशरणम् के निर्माण के उपरान्त दैनिक व साप्ताहिक कार्यक्रम के अतिरिक्त अखण्ड जाप, श्रीमद्भगवद्गीता व श्री रामायण जी के अखण्ड पाठ समय–समय पर, श्री रामशरणम् प्रेम सदन में सुचारु रुप से चल रहे हैं। गुरुजनों की उपस्थिति व कृपा का अहसास साधकों को निरन्तर होता है। गुरुजनों की अनुकम्पा का प्रतीक यह तीर्थ स्थान साधकों को शान्ति, भक्ति व आनन्द प्रदान करता है। ■

अनुभूतियाँ

# 'प्रभु का अनोखा ढंग है कृपा वृष्टि करने का भी'

परमात्मा की कृपा से 2010 में BSF में S.I. के पद पर नियुक्त हुआ क्योंकि मेरे पास ऐसी कोई योग्यता तो थी नहीं, मैं जम्मू कश्मीर में सेना में सिपाही के पद पर तैनात था और इस पद के लायक तैयारी का मौका कहाँ मिल पाता है। लेकिन परमात्मा ने मेरे परम मित्र के माध्यम से रास्ता दिखाया व मुझे अंतिम रूप से इस पद पर चयन होने तक प्रोत्साहित किया। सेना से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति भी समय से मिल गई ताकि इस पद पर ज्वाइन कर सकूँ।

2010 से 2021 तक की सर्विस भी श्री राम कृपा से सख्त प्रशिक्षण के बाद कश्मीर के दुर्गम इलाकों में नौकरी रही हो या प्रतिनियुक्ति के दौरान देश–विदेश के दौरे रहे हों या फिर वापिस 2020 में कश्मीर के कुपवाड़ा में नियुक्ति, सब अच्छा चलता रहा।

10 फरवरी 2021 को मुझे एक कंपनी को कमान करने कुपवाड़ा से 15 किलोमीटर दूर एक आर्मी कैंप में रहने और उस इलाके की सुरक्षा का जिम्मा सौंपा गया। 15 फरवरी 2021 को दैनिक दिनचर्या के अनुसार सुबह 5:00 बजे उठकर स्नान आदि क्रियाओं से निवृत्त होकर अमृतवाणी पाठ और ध्यान किया व फिर योगाभ्यास और सुबह की नियमित कसरत की व जवानों को सुरक्षा duty के लिए brief करके रवाना किया। वापिस अपने कमरे में जाकर नाश्ता किया व वर्दी पहनकर 09:00 बजे कंपनी ऑफिस में चला गया और नियमित कार्य किए। लगभग 09:30 बजे ऑफिस से बाहर निकला तो देखा मेरे कमरे की साइड से धुंएँ का बादल उठ रहा है। दौड़ कर गया तो देखा मेरा कमरा और साथ वाली बिल्डिंग भयंकर आग की चपेट में आ गई है और हम सब आग बुझाने में लग गए व कड़ी मेहनत के बाद आग पर काबू पाया जा सका। लेकिन आग इतनी भीषण थी की बिल्डिंग के साथ–साथ उसमें मौजूद सारा सामान भी राख हो गया और मेरे कमरे में मौजूद AK–47 के कारतूस भी आग से फट गए। कमरे का सारा समान जला हुआ देखकर एकदम सदमा सा लगा। जमाव बिंदु से नीचे तापमान पर आग पर काबू पाते समय पानी और जमी हुई बर्फ डालने से हाथ एकदम ठंडे हो गए थे।

हाथों को कोट की पॉकेट में डाला। कोट की पॉकेट में रखी जाप की छोटी माला को हाथ लगा। देखा माला तो कोट की पॉकेट में है और खुद भी अभी जिंदा हूँ, नहीं जला तो थोड़ी हिम्मत बंधी और सोचने लगा परमात्मा को कुछ और ही करना रहा होगा इसलिए यह सब किया होगा। सारे कमरे के समान का जायज़ा लिया। जले हुए कारतूस के खाली केस की खोजबीन शुरु की। मेरी आधी जली हुई डायरी भी मिली जिसके बीच में "अमृतवाणी" ग्रंथ भी रखा हुआ था। अमृतवाणी के किनारे थोड़े जलकर काले हो गए थे बाकी ग्रंथ को कुछ नहीं हुआ। यह सब होने के बाद मेरा जो विश्वास था उसे मैंने महसूस किया कि प्रभु ने मेरे साथ भी कुछ अलग तरीके से अच्छा करने का सोचा होगा।

इसके बाद विभागीय जांच का सिलसिला शुरु हुआ और इसी दौरान मैंने मेरे S.P.G. के प्रतिनियुक्ति अनुभव के आधार पर बड़ी कंपनी में जॉब के लिए अप्लाई किया और वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से इंटरव्यू हुआ। इंटरव्यू के बाद मुझे कंपनी की तरफ से सिक्योरिटी मैनेजर का ऑफर लेटर मिला जो कि मेरे वर्तमान पैकेज से अच्छा था व मैंने यह मानकर स्वीकार किया कि महाराज श्री की कृपा कुछ अलग तरीके से मिल रही है जिसे मैंने परमात्म कृपा मानकर स्वीकार किया।

विभागीय जाँच के मामले में भी मैं भाग्यशाली रहा। 10 जुलाई को विभागीय जाँच खत्म होने का आदेश आ गया जिसमें जाँच अधिकारियों द्वारा मैं निर्दोष पाया गया। वैसे विभागीय जाँच खत्म होने में कई साल लग जाते हैं क्योंकि इस आग में सरकारी संपत्ति और सर्विस एम्युनिशन का भी नुकसान हुआ था। जब तक जांच रिपोर्ट नहीं आती है तब तक नौकरी से त्यागपत्र नहीं दे सकता।

परमात्मा की कृपा से 31 अक्टूबर को मैं अपनी सेवा से त्यागपत्र देकर नए कार्यस्थल पर नव अनुभवों को सीखने की उम्मीद के साथ यही प्रार्थना करता हूँ कि कितनी भी विषम परिस्थिति हो परमात्मा आप अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखना। कोई फर्क नहीं पड़ता भौतिक वस्तुओं के जल जाने से बस आपका सुखद एहसास उन परिस्थितियों में भी कराते रहिएगा गुरुदेव। ■

# 'रोग में भी उसकी करुणा'

परम पूजनीय स्वामी जी महाराज जी ने लिखा है,

तेरे, मेरे राम जी, सभी निराले खेल।
पीड़ा, रोग, वियोग में भी होता तव मेल।

3 मई 2021 को मेरी कोविड की रिर्पोट positive आई। दो–तीन दिन घर पर इलाज हुआ। फिर आक्सीज़न कम होने के कारण हॉस्पिटल जाना पड़ा। यह मेरा कोई कर्म ही था, जो रोग के रुप में सामने आया और आगे की व्यवस्था श्री महाराज जी स्वयं देख रहे थे। अच्छे हस्पताल में बैड मिलना, जाते ही महँगी दवाईयों का प्रबन्ध होना, अच्छे डाक्टर, सेवा भाव वाला नर्सिंग स्टॉफ मिलना सब इतने व्यवस्थित ढंग से होता जा रहा था। हस्पताल में कई बार आँख खुलने पर गुरु महाराज जी को अपने बैड के पास बड़े गम्भीर भाव से जाप करते हुए पाया। मुझे लगा पीड़ा मुझे कम और मेरे गुरु महाराज जी को अधिक हो रही है। मैं निश्चिन्त हो कर आँख बन्द कर लेती, मुझे क्या चिन्ता गुरु महाराज हैं न जो उनकी इच्छा। जीवन दान देना है या अपने पास बुलाना है। 7 दिन बाद रिर्पोट negative आने पर घर आ गई।

घर आ कर भी आक्सीज़न concentrator का इंतज़ाम, बेटी के माध्यम से सेवा सब इतना सुव्यवस्थित ढंग से हुआ कि लगा कोई अदृश्य शक्ति सब कुछ कर रही है। निःसन्देह ये गुरु महाराज ही थे। अनेक साधकों की प्रार्थनाओं से, जप पाठ से मैं कोविड से मुक्त हूँ। यह गुरु कृपा ही है। यही प्रार्थना है कि जो भी आक्सीजन दिया है अपने जाप–पाठ और अपने दिए कार्यों में लगवाना। महाराज जी ने एक बार कहा था,''रोग में भी उसकी करुणा छिपी होती है'' इस बात का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ।



# विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

## जुलाई से सितम्बर 2021

- **अमरपाटन,** मध्य प्रदेश में 28 फरवरी व 1 मार्च को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 815 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। यह जानकारी सत्य साहित्य में पहले प्रकाशित नहीं की जा सकी।
- **जालन्धर**, पंजाब में 18 जुलाई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 192 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भोपाल,** मध्य प्रदश में 25 जुलाई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 109 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हिसार,** हरियाणा में 29 जुलाई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 79 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **औबेदुल्लागंज,** मध्यप्रदेश में 7 सितम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 190 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली** श्रीरामशरणम् में जुलाई, अगस्त में 109 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

### विशेष सूचना

- **लखनऊ,** उत्तर प्रदेश में 1 अक्तूबर शुक्रवार को रघुवर कृपा गेस्ट हाऊस (कबीर मन्दिर के पास) सीतापुर रोड में सायं 6 से 7 अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद नाम दीक्षा होगी।
- **इन्दौर,** श्रीरामशरणम् में 3 अक्तूबर रविवार को अपराह्न 3:30 से 4:30 बजे के विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद नाम दीक्षा होगी।

# Online Programes

## Shree Ram Sharnam, Delhi is on Twitter and Instagram.

For Twitter: http://mobile.twitter.com/sharnam_ram

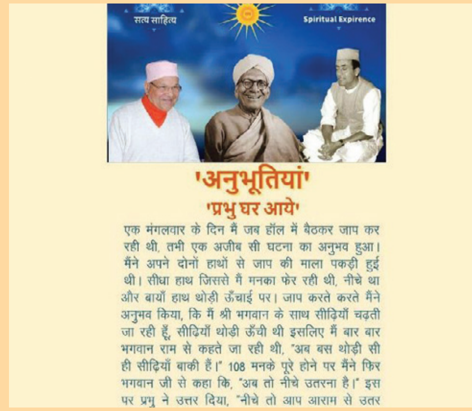


For Instagram: http://www.instagram.com/shreeramsharnamdelhi/

With the grace of Param Pujniya Gurujans, Satsangs have been enthusiastically attended by *sadhaks* from across the world. They have been broadcast through Shree Ram Sharnam's official YouTube and Facebook Channels.

A number of programmes have been held alongside the daily Satsang and Sunday Satsang. Average attendance at the daily satsang has been 5,000 and Sunday Satsangs have been 6,000 *sadhaks*. The following special programmes have been held online:

- Nirvan Divas of Param Pujniya Vishwa Mitter Ji Maharaj on 2 July. This satsang was attended by 11,058 *sadhaks*.
- Guru Purnima Satsang on 24 July. This was attended by 18,352 devotees.
- Nirvan Diwas of Param Pujniya Prem Ji Maharaj, on 29 July. Over 11,531 *sadhaks* attended the programme.
- Satsang on the occasion of Janmashtami on 30 August. This was attended by 8,708 devotees.

(Data extracted from YouTube and Facebook)

**On-going programme:**

- From 31st August till 15 October:, Ramayan Ji is being recited as part of the daily Satsang ■

## Calendar

### Poornima (September 2021 to December 2021)

| | | |
|---|---|---|
| September | 20 | Monday |
| October | 20 | Wednesday |
| November | 19 | Friday |
| December | 19 | Sunday |

### Naam Deeksha in Shree Ramsharnam Delhi (Sep 2021 to Dec 202)

| | | |
|---|---|---|
| October | 2 | Saturday |
| November | 14 | Sunday |
| December | 19 | Sunday |

Dear Children,

Here is a fun quiz for you to do. Answer the ten questions given below and then find the answers in the crossword. Enjoy!

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| D | S | H | V | B | R | T | G | X | B | V | R | I | P |
| G | O | B | E | M | F | R | O | Y | C | N | B | T | D |
| F | S | E | D | R | O | N | A | C | H | A | R | Y | A |
| X | C | N | V | Q | Y | N | T | F | F | P | A | E | Q |
| G | N | A | Y | R | P | T | C | S | D | A | H | H | H |
| U | K | N | A | T | B | R | O | T | C | A | A | B | N |
| R | V | A | S | H | I | S | T | H | N | E | S | A | T |
| U | Q | K | V | A | U | A | W | K | Q | D | P | R | K |
| P | L | D | Y | F | H | N | B | L | X | R | A | E | A |
| U | P | E | C | E | O | D | E | P | H | O | T | A | A |
| R | D | V | B | G | N | E | A | R | A | A | I | D | P |
| N | G | H | R | J | H | E | R | K | T | K | A | Q | E |
| I | B | V | Y | A | S | P | U | R | N | I | M | A | L |
| M | M | T | S | D | N | A | O | M | A | O | H | F | T |
| A | Y | O | V | O | W | N | A | R | A | D | A | G | O |
| Z | L | F | L | M | J | I | X | P | E | M | A | I | N |
| J | E | W | I | S | K | E | T | D | Y | K | B | I | p |
| R | A | M | K | R | I | S | H | A | N | R | G | T | A |

1. On whose birthday is Guru Purnima celebrated?
2. What is the name of the Guru of Lord Ram?
3. What is the name of the Guru of Lord Krishna?
4. On which auspicious day did Param Pujniya Sawami Ji Maharaj get Sakshatkar?
5. What is the name of the Guru of the Pandavas?
6. Who is the first Sikh Guru?
7. What is the other name of Guru Purnima?
8. Do you know the name of Swami Vivekananda's Guru?
9. What is the name of the Guru of the Devtas?
10. Do you know the name of the Dhruv & Prahlad's Guru?

Answers: Ved Vyas; Vashisth; Sandeepani; Guru Purnima; Dronacharya; Nanak Dev; Vyas Purnima; Ramkrishan Paramhans; Brahaspati; Narada.

NOTE: Dear children, we would love to get your suggestions on what you want in the children's page. Kindly WhatsApp your suggestions to 91-9582215824. Thanks!

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर-4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

**©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली**

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924